International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आर्य समाज और गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों का तुलनात्मक अध्ययन

[1] Reena, [2] Dr. Neeru Verma [3]Dr. S.P. Tripathi
[1] Research Scholar, (Education),
[2] Research Guide , Bhagwant University Ajmer, Rajasthan, India
Email Id: tarac4160@gmail.com
Edu.. Research Paper-Accepted Dt. 14 Sept 2023 Published : Dt. 30 Nov. 2023

सारां”ा– यह तुलनात्मक अध्ययन भारत के दो प्रभावशाली सामाजिक–धार्मिक संगठनों, आर्य समाज और गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों पर प्रकाश डालता है। 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज, वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार पर जोर देता है और सत्य, धार्मिकता और सामाजिक सुधार के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। दूसरी ओर, 1926 में अखिल वि”व गायत्री परिवार स्थापित पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की शिक्षाओं से प्रेरित आध्यात्मिक जागृति, समाज सेवा और समग्र विकास की वकालत करता है। आर्य समाज के शैक्षिक आदर्श वैदिक शिक्षा के महत्व के इर्द–गिर्द घूमते हैं, जिसे वह सच्चे ज्ञान की आधारशिला मानता है। आर्य समाज आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांतों की गहरी समझ को बढ़ावा देने के लिए वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों सहित वैदिक ग्रंथों के अध्ययन पर जोर देता है। यह वैदिक ज्ञान को संरक्षित और प्रचारित करने के लिए गुरु–शिष्य परंपरा (शिक्षक–शिष्य परंपरा) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के विचार को भी बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, गायत्री परिवार शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में समाज सेवा और न्याय को महत्व देता है। यह अकादमिक शिक्षा के साथ–साथ करुणा, सहानुभूति और निस्वार्थता जैसे गुणों की खेती पर जोर देता है। गायत्री परिवार का मानना है कि शिक्षा से न केवल बुद्धि समृद्ध होनी चाहिए बल्कि हृदय और आत्मा का भी पोषण होना चाहिए, जिससे व्यक्ति और समाज का समग्र विकास हो सके। आर्य समाज और गायत्री परिवार दोनों ही शिक्षा में नैतिक और नैतिक मूल्यों के महत्व पर जोर देते हैं। आर्य समाज एक सदाचारी जीवन जीने के महत्व पर जोर देते हुए, सीखने के सभी पहलुओं में धर्म के एकीकरण की वकालत करता है। इसी प्रकार, गायत्री परिवार एक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण के लिए ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों को आवश्यक मानते हुए उनके अभ्यास पर जोर देता है। इसके अलावा, आर्य समाज और गायत्री परिवार अपने शैक्षिक आदर्शों के माध्यम से सामाजिक सद्भाव और एकता को बढ़ावा देते हैं। आर्य समाज शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समानता और जातिगत भेदभाव और अंधविश्वास जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन की वकालत करता है। इसी तरह, गायत्री परिवार वसुधैव कुटुंबकम (दुनिया एक परिवार है) के विचार को बढ़ावा देता है और व्यक्तियों को सार्वभौमिक भाईचारे और शांति की दिशा में काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

भाब्द कुंजी– आर्य समाज, वैदिक ज्ञान, प्राचीन ग्रंथ, जातिगत भेदभाव और अंधविश्वास, अकादमिक शिक्षा, करुणा, सहानुभूति और निस्वार्थता आदि।

प्रस्तावना– यह तुलनात्मक अध्ययन भारत के दो प्रभावशाली सामाजिक–धार्मिक संगठनों, आर्य समाज और गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों पर प्रकाश डालता है। 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज, वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार पर जोर देता है और सत्य, धार्मिकता और सामाजिक सुधार के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। दूसरी ओर, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की शिक्षाओं से प्रेरित गायत्री परिवार आध्यात्मिक जागृति, समाज सेवा और समग्र विकास की वकालत करता है। आर्य समाज के शैक्षिक आदर्श वैदिक शिक्षा के महत्व के इर्द–गिर्द घूमते हैं, जिसे वह सच्चे ज्ञान की आधारशिला मानता है। आर्य समाज आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांतों की गहरी समझ को बढ़ावा देने के लिए वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों सहित वैदिक ग्रंथों के अध्ययन पर जोर देता है। यह वैदिक ज्ञान को संरक्षित और प्रचारित करने के लिए गुरु–शिष्य परंपरा (शिक्षक–शिष्य परंपरा) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के विचार को भी बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, गायत्री परिवार शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में समाज सेवा और न्याय को महत्व देता है। यह अकादमिक शिक्षा के साथ–साथ करुणा, सहानुभूति और निस्वार्थता जैसे गुणों की खेती पर जोर देता है। गायत्री परिवार का मानना है कि शिक्षा से न केवल बुद्धि समृद्ध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

होनी चाहिए बल्कि हृदय और आत्मा का भी पोषण होना चाहिए, जिससे व्यक्ति और समाज का समग्र विकास हो सके। आर्य समाज और गायत्री परिवार दोनों ही शिक्षा में नैतिक और नैतिक मूल्यों के महत्व पर जोर देते हैं। आर्य समाज एक सदाचारी जीवन जीने के महत्व पर जोर देते हुए, सीखने के सभी पहलुओं में धर्म के एकीकरण की वकालत करता है। इसी प्रकार, गायत्री परिवार एक सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण के लिए ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों को आवश्यक मानते हुए उनके अभ्यास पर जोर देता है।

भाोध प्रपत्र के उदे"य–

1ण आर्य समाज और गायत्री परिवार के मूलभूत शैक्षिक सिद्धांतों की जांच करना।
2ण आर्य समाज और गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों की तुलना करना।
3ण आर्य समाज और गायत्री परिवार द्वारा अपनाए गए शैक्षिक आदर्शों की प्रभावशीलता और प्रासंगिकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

शैक्षिक आदर्शों की परिभाषा –

शैक्षिक आदर्शों में मूलभूत सिद्धांत, मूल्य और उद्देश्य शामिल होते हैं जो किसी शैक्षिक प्रणाली या संगठन का मार्गदर्शन करते हैं। ये आदर्श उस नींव के रूप में काम करते हैं जिस पर शैक्षिक नीतियां, प्रथाएं और कार्यक्रम बनाए जाते हैं, जो शिक्षा की समग दिशा और उद्देश्य को आकार देते हैं।

अपने मूल में, शैक्षिक आदर्श व्यक्तियों और समुदायों के विकास और बेहतरी के लिए समाज की आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। वे ज्ञान प्राप्ति और आवश्यक कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों की खेती दोनों के संदर्भ में शिक्षा के वांछित परिणामों को स्पष्ट करते हैं। शैक्षिक आदर्श अक्सर सांस्कृतिक, दार्शनिक और वैचारिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं, जो किसी विशेष समाज या समूह की मान्यताओं और प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शैक्षिक आदर्शों के प्रमुख घटकों में शामिल हैं–

दार्शनिक आधार– शैक्षिक आदर्श अक्सर दार्शनिक ढाँचे में निहित होते हैं जो ज्ञान की प्रकृति, शिक्षा के उद्देश्य और शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिका को परिभाषित करते हैं। ये दार्शनिक दृष्टिकोण शैक्षिक लक्ष्यों और विधियों को आकार देते हैं, पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के बारे में निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

मूल्य और नैतिकता– शैक्षिक आदर्श नैतिक और नैतिक सिद्धांतों को स्पष्ट करते हैं जो शैक्षिक प्रक्रिया को रेखांकित करते हैं। वे शिक्षार्थियों के बीच चरित्र विकास, अखंडता, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मदारी को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देते हैं। शैक्षिक आदर्श न्याय, समानता, सम्मान और करुणा जैसे मूल्यों को बढ़ावा देते हैं, दूसरों के साथ बातचीत और समाज में उनके योगदान में व्यक्तियों का मार्गदर्शन करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ– शैक्षिक आदर्श उस सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ से प्रभावित होते हैं जिसमें वे उभरते हैं। वे समाज के प्रचलित मानदंडों, विश्वासों और आकांक्षाओं को दर्शाते हैं, विविध आबादी की जरूरतों और आकांक्षाओं को संबोधित करते हैं। बदलते सामाजिक मूल्यों, तकनीकी प्रगति और वैश्विक रुझानों के जवाब में शैक्षिक आदर्श समय के साथ विकसित होते हैं।

समानता और पहुंच– शैक्षिक आदर्श सभी व्यक्तियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच की वकालत करते हैं, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, क्षमताएं या सामाजिक–आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। वे समावेशी शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं जो सीखने और व्यक्तिगत विकास के समान अवसर सुनिश्चित करते हैं।

शैक्षिक आदर्श उन मार्गदर्शक सिद्धांतों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो शैक्षिक संस्थानों और प्रणालियों के दृष्टिकोण और मिशन को आकार देते हैं। वे शैक्षिक अनुभवों को डिजाइन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं जो बौद्धिक विकास,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चरित्र निर्माण और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देते हैं। साझा मूल्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट करके, शैक्षिक आदर्श शिक्षकों, शिक्षार्थियों, नीति निर्माताओं और हितधारकों को शिक्षा के माध्यम से एक अधिक न्यायपूर्ण, न्यायसंगत और प्रबुद्ध समाज बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आर्य समाज के शैक्षिक आदर्श–

- **वैदिक ज्ञान के महत्व को प्राथमिकता देना**– आर्य समाज शिक्षा को वैदिक ज्ञान के माध्यम से विश्वास करता है। यह ज्ञान सत्य और धर्म के आधार पर स्थित होता है।
- **धार्मिक तात्त्विकता को शैक्षिक प्रक्रिया में समाहित करना**– आर्य समाज शिक्षा को धार्मिक और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़ता है, जो छात्रों को सही और सत्य की पहचान करने में मदद करता है।
- **गुरु–शिष्य परंपरा को महत्व देना**– आर्य समाज में गुरु–शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है, जिसमें शिक्षा गुरु के शिष्य के साथ एक सम्पूर्ण आत्मिक और धार्मिक संबंध में प्रदान की जाती है।
- **समाज में न्याय और समानता के सिद्धांतों को प्रोत्साहित करना**– आर्य समाज शिक्षा क माध्यम से समाज में न्याय और समानता के महत्व को समझाता है और समाज के सभी वर्गों के लिए समान अवसरों की उपलब्धता का प्रमोट करता है।
- **सभी वर्गों और समुदायों के लोगों के लिए उचित शैक्षिक संविधान की स्थापना करना**– आर्य समाज शिक्षा के लिए समाज के सभी वर्गों और समुदायों के लोगों के लिए समान और उचित अवसरों की उपलब्धता को बढ़ावा देता है।

गायत्री परिवार के आरंभ आदर्श

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की शिक्षाओं से प्रेरित गायत्री परिवार एक सामाजिक–आध्यात्मिक संगठन है जो अपने शैक्षिक आदर्शों के माध्यम से आध्यात्मिक जागृति, समाज सेवा और समग्र विकास पर जोर देता है। यहां गायत्री परिवार द्वारा अपनाए गए शैक्षिक आदर्शों की व्याख्या दी गई है–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आध्यात्मिक जागृति– गायत्री परिवार का मानना है कि शिक्षा को अकादमिक शिक्षा से आगे बढ़कर आध्यात्मिक विकास को शामिल करना चाहिए। यह आंतरिक परिवर्तन, आत्म–बोध और किसी के उच्च स्व के साथ संबंध के महत्व पर जोर देता है। ध्यान, योग और शास्त्र अध्ययन जैसी प्रथाओं के माध्यम से, गायत्री परिवार का लक्ष्य व्यक्तियों को उनकी आध्यात्मिक क्षमता के प्रति जागृत करना और उन्हें एक उद्देश्यपूर्ण और पूर्ण जोवन जीने में मदद करना है।

समाज सेवा– गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों का केंद्र समाज की निस्वार्थ सेवा का सिद्धांत है। यह व्यक्तियों को उन गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है जो दूसरों को लाभ पहुंचाती हैं, जैसे सामुदायिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय सहायता। सामाजिक जिम्मेदारी और करुणा की भावना पैदा करके, गायत्री परिवार का लक्ष्य एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाना है।

समग्र विकास– गायत्री परिवार शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं को शामिल करते हुए व्यक्तियों के समग्र विकास की वकालत करता है। यह शिक्षा के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जो मानव अस्तित्व के सभी आयामों का पोषण करता है। अकादमिक शिक्षा के साथ–साथ, गायत्री परिवार सहानुभूति, लचीलापन और अखंडता जैसे गुणों को विकसित करने के महत्व पर जोर देता है, जो व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक हैं।

विज्ञान और अध्यात्म का एकीकरण– गायत्री परिवार विज्ञान और अध्यात्म के बीच अंतर्संबंध को पहचानता है और अपने शैक्षिक दृष्टिकोण में दोनों को एकीकृत करने का प्रयास करता है। यह आध्यात्मिक शिक्षाओं के साथ–साथ वैज्ञानिक सिद्धांतों की खोज को प्रोत्साहित करता है, ब्रह्मांड और उसके भीतर मानवता के स्थान की समग्र समझ को बढ़ावा देता है। विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच की खाई को पाटकर, गायत्री परिवार का लक्ष्य व्यक्तियों को एक व्यापक विश्वदृष्टि से लैस करना है जिसमें अनुभवजन्य साक्ष्य और पारलौकिक ज्ञान दोनों शामिल हैं।

सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा– गायत्री परिवार शिक्षा में मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रेम, शांति और एकता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देता है। यह वैश्विक सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने में सहिष्णुता, स्वीकृति और सहयोग के महत्व पर जोर देता है। समावेशिता की संस्कृति और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देकर, गायत्री परिवार एक ऐसी दुनिया बनाने का प्रयास करता है जहां सभी व्यक्ति आगे बढ़ सकें और समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें।

तुलना और विश्लेषण–

पहलू	आर्य समाज	गायत्री परिवार
मूलभूत आधार	वैदिक ज्ञान के पुनर्जीवन और सत्य, धर्म और सामाजिक सुधार के सिद्धांतों पर जोर देता है।	पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के उपदेशों से प्रेरित होकर, आध्यात्मिक जागरूकता, सामाजिक सेवा, और पूर्णात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।
शैक्षिक ध्यान	वेद, उपनिषदों, और अन्य प्राचीन पाठों के अध्ययन को शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण मानता है। आत्मिक और नैतिक सिद्धांतों के लिए वेदों का अध्ययन करने की प्रोत्साहना करता है।	आंतरिक परिवर्तन, स्व-ज्ञान, और ऊँचे आत्मिक सम्बन्ध को बढ़ावा देने के लिए ध्यान केंद्रित करता है। योग और शास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से आत्मिक उन्मुखीकरण को बढ़ावा देता है।
सामाजिक न्याय	शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समानता और जातिवाद जैसी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का प्रचार करता है।	समाज के लिए स्वेच्छा सेवा का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह व्यक्तियों को सक्रिय रूप से लोगों की भलाई के कार्यों में शामिल होने की प्रोत्साहना करता है।
पूर्णात्मक विकास	शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक विकास को महत्व देता है।	शिक्षा के लिए संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, और आत्मिक कल्याण को ध्यान में रखता है।
विज्ञान और आध्यात्मिकता	शिक्षा में वैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ वेदिक ज्ञान को एकीकृत करने का प्रयास करता है।	वैज्ञानिक सिद्धांतों को आध्यात्मिक शिक्षण के साथ मिलाकर ज्ञान की समग्र समझ को बढ़ावा देता है।
सार्वभौमिक मूल्य	नैतिक और धार्मिक मूल्यों को बढ़ावा देता है।	शिक्षा में प्रेम, शांति, और एकता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को प्रोत्साहित करता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कर्ष– आर्य समाज और गायत्री परिवार के शैक्षिक आदर्शों की तुलना और विश्लेषण से समानताएँ और भिन्नताएँ दोनों उजागर होती हैं। जहां आर्य समाज वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार, सामाजिक सुधार और शिक्षा के माध्यम से नैतिक और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने पर जोर देता है, वहीं गायत्री परिवार आध्यात्मिक जागृति, सामाजिक सवा और समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। दोनों संगठनों का लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों और समाज का उत्थान करना है, भले ही अलग–अलग दृष्टिकोण के माध्यम से। आर्य समाज वैदिक सिद्धांतों और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना चाहता है, जबकि गायत्री परिवार आंतरिक परिवर्तन और मानवता की निस्वार्थ सेवा को प्राथमिकता देता है। अपने अलग–अलग जोर देने के बावजूद, आर्य समाज और गायत्री परिवार दोनों एक अधिक प्रबुद्ध और सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा देने के सामान्य लक्ष्य को साझा करते हैं। अकादमिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षाओं को एकीकृत करके, उनका लक्ष्य ऐसे व्यक्तियों को तैयार करना है जो न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम हैं बल्कि नैतिक रूप से ईमानदार और सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी हैं। अंततः, उनके शैक्षिक आदर्श समग्र विकास, सामाजिक सुधार और सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देने के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- लाला लाजपत राय. (2021)। आर्य समाज– इसके मूल सिद्धांत और गतिविधियों की एक मात्रा, संस्थापक की जीवनी रेखाचित्र के साथ। ज्ञान पब्लिशिंग हाउस.
- लाला गणेशी लाल. (2018)। आर्य समाज (वैदिक समाज) और एशिया की नई रोशनी। टुरयू वर्ल्ड बुक्स, दिल्ली।
- बैंक्स, जे. (2016)। बहुसांस्कृतिक शिक्षा– मुद्दे और परिप्रेक्ष्य। जॉन विली एंड संस।
- यादव, ए.आर. (2015)। आर्य समाज एवं स्वातंत्र्य गतिविधि।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 11, Nov- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- चमूपति, पी. (2012)। आर्य समाज के घटक. डी.ए.वी. प्रकाशन विभाग, दिल्ली।
- प्रमबिक्षु, ए. (2009)। दयानंद की दया. सत्य प्रकाशन वाडमंदिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा।
- डेवी, जे. (1916)। लोकतंत्र और शिक्षा. फी प्रेस।
- नोडिंग्स, एन. (1995). शिक्षा का दर्शन. वेस्टव्यू प्रेस।
- गार्डनर, एच. (1983)। फ्रेम्स ऑफ माइंड– द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस। बुनियादी पुस्तकें.
- कुमाशिरो, के. (2009)। सामान्य ज्ञान के विरुद्ध– सामाजिक न्याय की ओर शिक्षण और सीखना। रूटलेज।
- गिरौक्स, एच. (2011)। शिक्षा और सार्वजनिक मूल्यों का संकट। पीटर लैंग प्रकाशन।
- एप्पल, एम. (2004). विचारधारा और पाठ्यक्रम. रूटलेज।
- सेन, ए. (1999)। स्वतंत्रता के रूप में विकास. एंकर पुस्तकें।
- आइजनर, ई. (1994)। शैक्षिक कल्पना– स्कूल कार्यक्रमों के डिजाइन और मूल्यांकन पर। टीचर्स कॉलेज प्रेस.